Roll No. : .....

Total No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages : **4**

APP–1003

M.A. (Previous) Examination, 2022

HINDI

Paper - III

(प्राचीन काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **100***

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 = 40)**

नोट :– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 = 40)**

नोट :– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द) :

(i) ''बज्जिय घोर निसांन, राँन चौहान चहौं दिस।''

इस पंक्ति में किस सम्राट का, किस रस का सांगोपांग वर्णन है ?

(ii) 'पृथ्वीराज रासो' को प्रामाणिक मानने वाले विद्वानों के नाम बताइए।

(iii) गणेशजी के मस्तक पर लगे हुए सिन्दूर के लिए किस उपमान का प्रयोग किया गया है ?

(iv) राजमती ने राजसेवक को नारी बनाया जाना क्यों अच्छा नहीं माना ?

(v) 'विद्यापति पदावली' का काव्य रूप भाषा तथा किस रस की प्रधानता दृष्टिगत होती है ?

(vi) गीति काव्य परम्परा में प्रसिद्ध **चार** कवियों के नाम लिखिए।

(vii) कबीर की रचनाएँ किसमें संकलित हैं ? श्यामसुंदर दास द्वारा संपादित कबीर से संबंधित ग्रंथ का नाम बताइए।

(viii) संत शब्द का अर्थ बताइए।

(ix) 'सिंहल द्वीप' की विशेषता क्या है ?

(x) नागमती का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

खण्ड–ब

नोट :– निम्नलिखित सात में से किन्हीं **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मनहुँ कला ससिभानं, कला सोलहसो बन्निय।
बाल बेस ससि ता समीप, अंम्रित रस पिन्निय।
बिगंसि कमल म्रिग भ्रमर, बैन षंजन मृग लुट्टिय।
हीर कीर अरु बिम्ब, मोति नष सिष, अहि घुट्टिय॥
छत्रपति गयंद हरि हंसगति, विह बनायै संचै सचिय।
पदमिनिय रूप पद्मावतिय, मनहुँ काम कमिनि रचिय॥

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

न को हार नह जीत, रहेइ न रहहि सूखर।
धर उप्पर भर परत, करत अति जुद्ध महाभर॥
कहौं कमध कहौ मथ्थ, कहौं कर चरन अंत रूरि।
कहौं कंध वहि तेग, कहौ सिर जुट्टि फुट्टि उर।
कहौ दंत मंत हय षुर षुपरि, कुंभ भ्रसुंडह रूंड सब।
हिंदवान रान भय भांन मुष, गहिय तेग चहुवान जब।

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

हंस गमणि मृगलोयणी नारि।

सीस समारइ दिण गिणइ।

ततषिणि ऊभी छइ राजदुवारि।

नाहनइ जोवइ चिंहु दिसइ।

काइं सिरजी उलगाणोरी वारि।

जाइ दिहाडउ रे झूरतां॥

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

देख-देख राधा रूप अपार।

अपुरुब के बिहि आनि मिला ओल खिति तल लावण सार।

अंगहि अंग अनंग मुरछाइत हेरए पड़इ अधीर।

मनमथ कोटि मथन करु जे जन से हेरि महि मधि गीर।

कत-कत लखिमी चरन तल न ओछए रंगिनी हेरि विभौरि।

करु अभिलाख मनहिं पद पंकज अहोनिसि कोर अगोरि॥

6. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

विरहनि ऊभी पंथ सिरि, पंथी बूझै थाइ।

एक सबद कहि पीवका, कबरै मिलैंगे आइ॥

यह तन जालौ मति करूं, ज्यू धूवां जाइ सरिग्ग।

मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्नि॥

आंषड़िया झाई पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।

जीभड़िया छाला पड्यां, राम पुकारि-पुकारि॥

7. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

नव पौरी पर दसवँ दुवारा। तेहि पर बाज राज-घरियारा॥

धरि सौ बैठि गनै घरियारी। पहर पहर सो आपनि बारी॥

जबहिं धरि पूजि तेइ मारा। घरी-घरी घरियार पुकारा॥

परा जो डाँड जगत सब डांडा। का निचिंत माटी कर भांड़ा ?

तुम्ह तेहि चाक चढ़े हौ कांचे। आएहु रहै न थिर होइ बांचे॥

धरी जो भरी घटी तुम्ह आऊ। का निचिंत होइ तोउ बटाऊं ?

पहरहि पहर गजर निति होई। हिया बजर, मन जाग नसौई॥

मुहम्मद जीवन-जल भरन, रहँट-धरी कै रीति।

धरी जो आई ज्यों भरी, ढरी जनम गा बीति॥

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

चढ़ा आसाढ़ गगन घन गाजा। साजा बिरइ दुन्द दल बाजा॥

धूम, साम, धोरे धन धाए। सेत धजा बग पांति देखाए॥

खड़ग-बीज चमके चहुँ ओरा। बुंद-बान बरसहिं घन घोरा॥

ओनई घटा आइ चहुँ फेरी। कंत! उबारू मदन हौं घेरी॥

दादुर, मोर, कोकिला, पीऊ। गिरे बीजु, घट रहै न जीऊ॥

पुष्प नखत सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाह, मंदिर को छावा॥

अद्रा लाग लागि भुई लेई। मोहिं बिनु पिउ को आदर देई ?

जिन्ह घर कंता ते सुखी, तिन्ह गारौ औ गर्व।

कंत पियारा बाहिरै, हम सुख भुला सर्व॥

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

9. "'पद्मावती समय' में वीर और शृंगार रस का अद्भुत समन्वय हुआ है।" इस कथन की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

10. 'बीसलदेव रासो' की काव्यगत विशेषताएँ बताइए।

11. 'विद्यापति भक्त थे या शृंगारी।' उपयुक्त उदाहरणों सहित इस मत की समीक्षा कीजिए।

12. 'आज कबीर सर्वाधिक प्रासंगिक कवि हैं।' कबीर के सामाजिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में इस कथन पर विचार कीजिए।